International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधी दर्शन: तत्व मीमांसा, स्त्रोत एवं प्रभाव

विवेक

प्रस्तावना

महात्मा गांधी एक विचारक, समाज सुधारक, नेता के साथ सक्रिय राजनीतिक और विचारशील चिंतक थे। गांधीजी भारतीयता के सांचे में ढले अहिंसा, सत्य, विश्व प्रेम आदि के साथ एक बहुत बड़े रणनीतिकार थे। गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के आधार पर संपूर्ण विश्व को समाज के नव-निर्माण का मार्ग दिखाया। गांधीजी शुद्ध राजनीतिक विचारक नहीं थे, बल्कि वे सच्चे कर्मयोगी थे। वे मूल रूप से कर्मण्यतावादी विचारक थे, जिन्होंने अपने सिद्धांतों को व्यावहारिक भूतल पर उतारा तथा उन्हें यथार्थ की कसौटी पर कसा। जो विचार इस कसौटी पर खरे नहीं उतरे उन विचारों को उन्होंने परिवर्तित भी किया। यही कारण है कि गांधीजी ने अपने विचारों को अंतिम सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया और उन्होंने अपनी गतिविधियों को सत्य के लिए खोज बताया।

गांधीजी ने लिखा है कि, "मैं अपने पीछे कोई वाद नहीं छोड़ना चाहता। मेरे जो विचार आज है, मैं उन्हें कल बदल भी सकता हूँ। मेरे पास सीखने के लिए कुछ नया नहीं है। सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने है जितनी पहाड़ियां। गांधीजी असहयोग, सत्याग्रह, सविनय-अवज्ञा और भारत छोड़ो जैसे मौलिक आंदोलनों के मार्गदर्शक रहे। गांधीजी के व्यक्तित्व और उनके विचारों का प्रभाव न केवल भारत बल्कि विश्व स्तर पर व्यापक रूप से पड़ा। उनके विचार मुख्य रूप से प्रयोगात्मक रूप में उभरे। अर्थनीति और राजनीति में नैतिकता का समावेश, संपत्ति संबंधों में अपरिग्रह की अवधारणा, धर्म का अभिनव प्रतिपादन, संकीर्ण राष्ट्रवाद की अस्वीकृति, अहिंसक समाज का निर्माण, प्रतिस्पर्धा

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के स्थान पर सहयोग और सार रूप में राजनीति के स्थान पर लोकनीति के कतिपय अवधारणाएं वर्तमान तनावपूर्ण विश्व को एक नई रोशनी, नई दिशा प्रदान करती है।

गांधीजी मानव के समस्त अस्तित्व का पुनर्निर्माण करना चाहते थे। गांधीजी मात्र एक सुधारक ही नहीं बल्कि संपूर्ण समाज का नवीन सिद्धांतों के आधार पर पुनर्गठन करना चाहते थे। उन्होंने नैतिकता को अपने जीवन के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया तथा हर प्रकार के अतिवाद का विरोध करते हुए उसे नैतिकता के सांचे में ढालने का प्रयास किया। गांधीजी के अनुसार धर्म भी नैतिक नियम का पर्याय है। यही कारण है कि गांधीजी ने नैतिकता और राजनीति के बीच पुल का निर्माण करते हुए यह तर्क दिया कि राजनीति के क्षेत्र में साधन और साध्य दोनों समान रूप से पवित्र होने चाहिए। उनके दृष्टिकोण में राजनीति वही तक सही है, जहां तक वह नैतिकता की कसौटी पर खरी उतरती हो अन्यथा उससे किनारा कर लेना चाहिए। गांधीजी ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक जीवन को अलग-अलग विभागों में कभी नहीं देखा बल्कि संपूर्ण जीवन को अखंड मानकर धर्म को उसका सार तत्व स्वीकार किया। उनके दृष्टिकोण में विश्व के समस्त धर्मों का सार-तत्व और उद्देश्य एक है। वे धार्मिक उदारता और सहिष्णुता के समर्थक थे। राजनीति के धार्मिक आधार से गांधीजी का अभिप्राय था कि प्रत्येक राजनीतिक संस्था को नैतिक कसौटी पर कसना आवश्यक है। गांधीजी के अनुसार भौतिक संसार और इसकी चमक-दमक नश्वर है। मानवीय जीवन की उन्नति हेतु आध्यात्मिक जीवन का तिरस्कार करना बुद्धिमानी नहीं है। गांधीजी के अनुसार जो राजनीति विहीन है, वह मृत्यु जाल के समान है जो आत्मा को पतन के गर्त में धकेलती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधीजी ने अपने चिंतन में भारतीय मूल्यों को प्रस्तुत किया है, जिसमें नैतिकता, पवित्रता और छल-कपट की राजनीति के स्थान पर उन्होंने सहयोग, सत्य, अहिंसा, लोक कल्याण, प्रेम और सेवा पर बल दिया। गांधीजी का राजनीतिक चिंतन समान समाज की परिकल्पना करता है और प्रशासन, न्यायालय, संप्रभुता, चुनाव-पद्धति, शिक्षा और अहिंसक राज्य की विदेश नीति आदि के बारे में विशेष व्यवस्था देते हुए राज्य विहीन व्यवस्था पर बल देता है। गांधीजी ने राजनीति में शक्ति की अपेक्षा सादगी, नैतिकता और हृदय परिवर्तन को महत्वपूर्ण माना है।

महात्मा गांधी के चिंतन पर प्रभाव

गांधीजी राजनीतिक दर्शन और तत्वशास्त्र के क्षेत्र में परंपरागत ढंग से चिंतन करने वाले व्यक्ति नहीं थे, वे एक अनुप्रेरित शिक्षक होने के साथ एक संदेशवाहक भी थे। उन्होंने शंकराचार्य अथवा कांट की भांति मात्र विचारक नहीं थे, बल्कि बुद्ध व सुकरात के सदृश्य थे, जिन्होंने मानवीय समाज की समस्याओं पर गहराई से विचार किया तथा अपने कर्म क्षेत्र में उनके समाधान का प्रयास किया। दक्षिण अफ्रीका और भारत की राजनीति उनकी प्रयोगशाला थी, जिसमें उन्होंने अपने सत्य और अहिंसा संबंधी सिद्धांतों का परीक्षण किया।

उन्होंने संपूर्ण भारत की जनता में राजनैतिक चेतना पैदा की और देश को अंग्रेजो की गुलामी से आज़ाद कराया। यह उनकी सबसे बड़ी देन नहीं बल्कि मानवता को उनकी सबसे बड़ी देन अहिंसा हैं। महात्मा गांधी ने मानव जाति को यह शिक्षा दी कि बिना हथियारों के भी शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष किया जा सकता है व सफलता प्राप्त की जा सकती है। गांधीवादी चिंतन के विषय में मुख्यतः दो विचारधाराएं है, पहली विचारधारा के अनुसार वे संपूर्ण मानव जाति से संबंधित है और सभी चीजों से ऊपर उठे हुए थे। दूसरी विचारधारा यह है कि उनके विचारों पर

हिंदू धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा और वह हिंदू धर्म के प्रति निष्ठावान थे। गांधी चिंतन इतना व्यापक व विशाल है कि उसे गांधीवाद कहा जाता है। यद्यपि गांधीजी स्वयं किसी वाद का प्रतिपादन नहीं करना चाहते थे। इस संबंध में गांधीजी का कथन है कि "गांधीवाद जैसी कोई वस्तु नहीं है और न ही मैं अपने पीछे कोई ऐसा संप्रदाय छोड़ना चाहता हूँ। मैं कदापि यह दावा नहीं करता कि मैंने किंही नवीन सिद्धांतों का सृजन किया है। मैंने तो केवल निजी तरीकों से शाश्वत सत्य को दैनिक जीवन और उनकी समस्याओं पर निरूपित करने का प्रयास किया है। मैंने जो धारणा बनाई है और जिन परिणामों पर में पहुंचा हूं, वे अंतिम नहीं है। मैं उन्हें कल बदल भी सकता हूं। मुझे संसार को कुछ नया नहीं सिखाना है। जितने पुराने यह पहाड़ है, उतने ही पुराने सत्य और अहिंसा के सिद्धांत है। मैंने केवल सत्य और अहिंसा के क्षेत्र में व्यापक आधार पर यथाशक्ति परीक्षण करने का प्रयास किया है। इस प्रकार सत्य और अहिंसा के आचरण मेरे लिए जीवन एक परीक्षण बन गया है।.... तथ्य यह है कि सत्य की खोज में मैंने अहिंसा को ढूंढा है। मेरा दर्शन, जिसे आपने गांधीवाद के नाम से पुकारा है, सत्य और अहिंसा में निहित है। इसे आप गांधीवाद कहकर न पुकारे, क्योंकि इसमें वाद जैसी चीज नहीं है।"

गांधीजी के उपरोक्त विचारों से स्पष्ट है कि गांधी दर्शन का आधार स्तंभ सत्य व अहिंसा है। गांधीजी नैतिक सिद्धांतों और विचारों का एक ऐसा योग है, जो सब प्राणियों को समान व ईश्वर का रूप मानकर सत्य व अहिंसा के साधनों द्वारा सर्वोदय की स्थापना करने का प्रयास करता है। जिसकी मान्यता अनुसार सामाजिक, व्यक्तिगत, राजनीतिक जीवन का नियमन सत्य व अहिंसा के द्वारा किया जा सकता है। वस्तुतः गांधीवाद जीवन की एक शिक्षा है, एक जीवन दर्शन है, सामाजिक, व्यक्तिगत व अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के संचालन की इसकी अपनी विशिष्ट विचारधारा

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। जिस आध्यात्मिक मापदंड से यह सामाजिक प्रश्नों का मूल्यांकन करता है, उसी मापदंड से आर्थिक और राजनीतिक प्रश्नों को भी देखता है।

गांधीजी के परिवार ने सामाजीकरण के आरंभिक अभिकर्ता के रूप में गांधीजी के मस्तिष्क को प्रभावित किया, जिसके कारण गांधीजी का धर्म के प्रति रुझान बढ़ा और गांधीजी संत राजनीतिज्ञ बन गया। गांधीजी को धार्मिकता अपने परिवार और वैष्णव पृष्ठभूमि अपनी मां से प्राप्त हुई है। मां की धार्मिकता, निर्भीकता और सत्यवादिता का उन पर प्रभाव पड़ा, जिसे स्वीकार करते हुए गांधीजी ने कहा है कि "जो कुछ पवित्रता मेरे में है वह मेरी मां से प्राप्त हुई है पिता से नहीं। वह अत्याधिक धार्मिक थी, बिना अपने दैनिक प्रार्थना के भोजन के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। वैष्णव मंदिर जाना उनका दैनिक कर्तव्य था।" मां ने गांधीजी के मन में प्रेम और सत्य के प्रति प्रतिबद्धता स्थापित की तथा सहनशीलता का पहला पाठ उन्हें अपनी मां से मिला। इंग्लैंड प्रस्थान से पूर्व अपनी मां को दिए गए वचन ने गांधीजी को भयंकर चुनौतियों के मध्य दृढ़ निश्चयी बनाया तथा लक्ष्य प्राप्ति के प्रति यही दृढ़ता आजीवन उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बनी।

सिद्धांत के लिए अडिग रहकर संघर्ष करने और अन्याय के आगे घुटने न टेकने की प्रवृत्ति उन्होंने अपने पिता से ग्रहण की, यद्यपि गांधीजी को सहनशीलता का पहला पाठ अपनी मां से मिला लेकिन उन्होंने सहनशीलता का गुण अपेक्षाकृत पिता से अधिक प्राप्त किया। गांधीजी के पिता अपने मुसलमान और पारसी मित्रों से धर्म और विश्वास की बातें करते थे, जिनका प्रभाव उनके कोमल हृदय पर पड़ा।

सहनशीलता की भावना की पुनर्स्थापना पत्नी कस्तूरबा के विचारों द्वारा हुई। गांधीजी ने पत्नी के बारे में लिखा है कि "पत्नी जिसकी अनुपम सहनशीलता की क्षमता हमेशा विजयी रही है। उसकी

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दृढ़ इच्छा ने अज्ञानता से मेरे कला के अभ्यास और अहिंसक सहयोग के क्षेत्र में शिक्षण का कार्य किया है।"

सार्वजनिक जीवन में धर्म के व्यापक महत्व की प्रेरणा गांधीजी को अपनी धाय रम्भा से मिली, जिससे उन्होंने धर्म का वास्तविक मर्म ग्रहण किया। रम्भा ने उन्हें यह मंत्र दिया कि ईश्वर दिखावे या आडंबर से प्रसन्न नहीं होता अपितु उसके प्रति मन में धारण की गई सच्ची श्रद्धा, सारे कष्टों, कठिनाइयों तथा संघर्षों में प्रेरक शक्ति के रूप में साथ देती है।

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि धाय रम्भा ने उन्हें सर्वप्रथम राम नाम की शक्ति से परिचित कराया। गांधीजी लिखते है कि "बचपन में बीज बोया गया, वह नष्ट नहीं हुआ। आज राम नाम मेरे लिए अमोघ शक्ति है। मैं मानता हूं कि उसके मूल में रम्भाबाई का बोया हुआ बीज ही है।" उन्होंने राम को ऐतिहासिक पुरुष तथा अनादि ईश्वर दोनों रूपों में देखा।

रामचरितमानस के प्रति उनके प्रेम को देखते हुए कुछ लोग यह सोचते है कि उनके राम अयोध्या नरेश दशरथ पुत्र थे, किंतु ऐसा सोचना गलत है। इस संबंध में गांधीजी ने स्वयं कहा है कि "मेरे राम हमारी प्रार्थना के राम अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र ऐतिहासिक राम नहीं है। वे शाश्वत, अजन्मा, अद्वितीय है, केवल उन्हीं की मैं पूजा करता हूं।" उन पर तुलसीदास, सूरदास, मीरा, नरसा मेहता आदि संतों का गहरा प्रभाव पड़ा, किंतु वह मुस्लिम व ईसाई धर्म के प्रभाव से अछूते नहीं रहे।

गांधीजी जैन धर्म से भी काफी प्रभावित हुए। गुजरात में जैन धर्म को मानने वाले बड़ी संख्या में रहते है। जैन धर्म के 'अहिंसा परमो धर्मः' ने उनके जीवन को बहुत प्रभावित किया है। गांधीजी की मान्यता थी कि भगवान की कृपा से ही मुक्ति और आत्मसाक्षात्कार संभव है। वे साकार और

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सद्गुण ईश्वर में आस्था नहीं रखते हुए भी अवतारवाद में विश्वास रखते थे। अद्वैतवादी विचारधारा को स्वीकार करते हुए गांधीजी ईश्वर को सृष्टि का रचयिता स्वीकार करते है। गांधीजी वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा तुलसीदास की रामचरितमानस से अधिक प्रभावित दिखाई देते है। रामराज्य का सिद्धांत रामचरितमानस से ही लिया गया है।

हिंदू धर्म ग्रंथों में भगवद्गीता का गांधीजी पर गहरा प्रभाव पड़ा है। गांधीजी को गीता से अहिंसा, सत्य, सदाचार की शिक्षा मिली। गीता उनके लिए एक आध्यात्मिक संदर्भ ग्रंथ थी। निष्काम कर्मयोग और सत्याग्रह के आवश्यक गुण उन्होंने गीता से सीखे। भगवद्गीता में प्रतिपादित असत् से विरत रहने की नीतिशास्त्रीय परिपूर्णता, मीमांसा द्वारा समर्थित सामाजिक नियंत्रण और शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अभेद की भावना का सार-संकलन गांधी दर्शन में किया गया है। गांधीजी का यह कहना है कि भारी निराशा और असफलता के बीच जब उन्हें सर्वत्र अंधकार नजर आता है, तब केवल भगवद्गीता ही मेरे लिए प्रकाश पुंज रही है।

गांधीजी का विचार था कि गीता मुक्ति व सांसारिक जीवन में कहीं विरोध नहीं बताती। इसका यही संदेश है कि हमारे सांसारिक कार्यों पर धर्म का गहरा प्रभाव रहना चाहिए और इसे दैनिक जीवन में न उतारा जा सके तो वह धर्म नहीं है किंतु उन्होंने हिंदू धर्म ग्रंथों को संपूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया बल्कि जो अनुपयुक्त और अनैतिकतापूर्ण था उससे वह सदा विमुख रहे। वेद, उपनिषद, गीता और कुरान वही तक गांधीजी को स्वीकार्य थे जहां तक उन्हें वे विवेक पूर्ण लगा, इसके साथ ही वे हिंदू धर्म को एकमात्र धर्म नहीं मानते थे। उनका कथन था कि मै एकमात्र वेदों की दिव्यता पर विश्वास नहीं करता हूं। मेरा विश्वास है कि कुरान, बाइबिल और जेंदावेस्ता भी उतने ही ईश्वर प्रेरित ग्रंथ है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधीजी के अनुसार सभी धर्म एक ही लक्ष्य तक पहुंचने वाले अलग-अलग मार्ग है। उनका यह भी मानना था कि सभी धर्म समान नैतिक नियमों पर आधारित है। उनके अनुसार उनका नैतिक धर्म उन नियमों से बना है जिससे संपूर्ण विश्व के मनुष्य आबद्ध है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हिंदू धर्म ग्रंथों ने गांधीजी के विचारों और उनके व्यक्तिगत जीवन को एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके स्वयं के मत में "हिंदू धर्म ग्रंथ मेरी आत्मा की आवश्यकता को पूरा करते है।" हिंदू धर्म ग्रंथों के अलावा चीन के दार्शनिक, ईसाई धर्म, जैन धर्म, इस्लाम, बुद्ध, टॉलस्टॉय, रस्किन, थोरो आदि से भी गांधीजी के विचारों को प्रेरणा मिली है।

गांधीजी पर ईसाई धर्म का भी गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने लिखा है "बाइबिल मेरे लिए उसी प्रकार का धर्म ग्रंथ है जैसे कि मेरे लिए गीता और कुरान है।"

सरमन ऑन दी माउंट का प्रभाव गांधीजी के हृदय पर पड़ा और उनकी बातों को वे जीवन भर व्यवहार में लाते रहे - "बुराई को अच्छाई से जीतना चाहिए, यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे गाल पर एक थप्पड़ लगाए तो उसके सामने दूसरा गाल भी कर दो, अपने वैरी को प्रेम दो, जो तुम्हें घृणा करें तुम उनका भला करो, तुम्हारा शत्रु भूखा है तो उसे खाने के लिए रोटी दो, यदि वह प्यासा है तो पीने के लिए पानी दो।" ईसा मसीह से ही उन्होंने यह सीखा था कि - " हे प्रभु आप उन्हें क्षमा करें जिन्हें यह मालूम नहीं है कि वह क्या कर रहे है।"

इसके अलावा गांधीजी पर रस्किन की 'अनटु दिस लास्ट', थोरो की 'ऑन सिविक डिस ऑबिडियेन्स' व टॉलस्टॉय की 'किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का भी गहरा प्रभाव पड़ा। सभी प्रकार के श्रम की समानता का विचार उन्होंने रस्किन से ग्रहण किया। रस्किन की 'अनटु दिस लास्ट' तथा 'क्राउन ऑफ वाइल्ड ओलाइब्ज' नामक पुस्तकों से गांधीजी को कायिक श्रम की सीख मिली।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रस्किन से उन्होंने यह तत्व तय किया कि समाज में साधारण आदमी का भी महत्व है और इसलिए उनके कल्याण का प्रयास किया जाना चाहिए। रस्किन द्वारा प्रतिपादित किए गए सिद्धांत गांधीजी के लिए प्रेरणा स्रोत बने। इस पुस्तक के संदेश ने गांधीजी के जीवन में रचनात्मक परिवर्तन किए और इसका उन्होंने बाद में गुजराती भाषा में 'सर्वोदय' के नाम से अनुवाद किया। अमेरिकी दार्शनिक थोरो से गांधीजी ने सविनय अवज्ञा, राज्यहीन समाज, सरकार से असहयोग आदि प्रश्नों पर नैतिक प्रेरणा प्राप्त की। थोरो ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया कि जो सरकार जनता की हितैषी नहीं है उनके साथ जनता को असहयोग करना चाहिए।

गांधीजी ने अपने सत्याग्रह में अनेक कार्यक्रमों को स्वीकार किया जो थोरो द्वारा प्रतिपादित किए गए थे। इसी क्रम में टॉलस्टॉय के विचारों से भी गांधीजी को प्रेरणा मिली। गांधीजी टॉलस्टॉय के समान राज्य को हिंसा का प्रतीक और मानव के नैतिक विकास में एक बाधक संस्था मानते थे। टॉलस्टॉय की भांति गांधीजी भी युद्ध की घोर निंदा, अहिंसात्मक विरोध, शांतिवाद का समर्थन, शारीरिक परिश्रम की पूजा और व्यक्तिगत, सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों में विश्वास रखते थे। गांधीजी के सचिव प्यारेलाल का यह मत है कि "टॉलस्टॉय ने गांधीजी के जीवन के संपूर्ण दृष्टिकोण को प्रभावित किया है । उनके धर्म, कला, अर्थशास्त्र, राजनीति संबंधी विचार टॉलस्टॉय द्वारा पूर्ण रूप से प्रभावित थे।

गांधी दर्शन और भारत

गांधीजी ने गोपाल कृष्ण गोखले के निर्देशानुरूप भारतीय परिस्थितियों, जनता की स्थिति और प्रमुख नेताओं के दृष्टिकोण का अध्ययन किया। गांधीजी ने गोखले को अपना राजनीतिक गुरु स्वीकार किया तथा उन्होंने भारत में अपने आंदोलनों की तैयारी आश्रम के माध्यम से की। ये

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आश्रम एक प्रकार के प्रशिक्षण केंद्र थे, जहां गांधीवादी सिद्धांतों के आधार पर सत्याग्रहियों को भावी प्रशिक्षण दिया जाता था और दक्षिण अफ्रीका में भी उन्होंने स्वयं अपने परिवार हेतु आवास के अतिरिक्त टॉलस्टॉय फार्म और फिनिक्स सेटलमेंट स्थापित किया। ये आश्रम उनके नेतृत्व के संगठनात्मकता को अभिव्यक्त करते है, जो गांधीजी को अन्य राजनेताओं की तुलना में अधिक सम्माननीय और महात्मा बनाते गए।

- **चंपारण सत्याग्रह -** गांधीजी ने 10 अप्रैल 1917 को चंपारण सत्याग्रह शुरू किया। यहां पर उन्होंने अहिंसा का प्रयोग किया, चंपारण जिले के किसानों को नील की खेती के लिए बाध्य किया जाता था। सभी किसानों को 3/20 भू-भाग पर नील की खेती करना अनिवार्य होता था, किंतु यूरोप में कृत्रिम रंगों के आविष्कार के कारण जब नील की खेती में लाभ कम होने लगा तो विविध प्रकार के कर हर्जाने के रूप में वसूल किए जाने लगे जिसका गांधीजी ने विरोध किया। अंत में गवर्नर ने अपनी गलती स्वीकार की तथा गांधीजी से सहयोग मांगा। ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त चंपारण कृषक जांच समिति में गांधीजी को भी सदस्य बनाया गया तथा सरकार द्वारा तिनकठिया और अन्य अतिरिक्त करों को भी समाप्त किया गया। इस प्रकार चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी को विजय प्राप्त हुई।
- **खेड़ा सत्याग्रह** - गांधीजी ने 4 फरवरी 1918 को खेड़ा सत्याग्रह की घोषणा की, इसी क्रम में गांधीजी ने सरदार पटेल के नेतृत्व में ग्रामीण जनता को सत्याग्रह के लिए तैयार किया। किसानों ने सरकार को लगान नहीं दिया जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने दमनकारी रूप अपनाया। गांधीजी ने यह आंदोलन नड़ियाद में अनन्त आश्रम स्थापित करके संचालित किया। बाद में ब्रिटिश सरकार ने यह निर्देश दिया कि किसानों से वसूली स्थगित की जाए

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तथा उन्हें जमीन से बेदखल न किया जाए। इन निर्देशों के प्रभावी होने के साथ ही खेड़ा सत्याग्रह को समाप्त कर दिया गया।

- **असहयोग आंदोलन** - दक्षिण अफ्रीका से गांधीजी अपने साथ जीवन का विशेष दर्शन और एक ऐसी राजनीतिक पद्धति लाए थे जिसकी उपयोगिता वहां सिद्ध हो चुकी थी। रॉलेक्ट एक्ट, जलियांवाला बाग हत्याकांड आदि प्रश्नों पर गांधीजी ने सरकार से असहयोग का मार्ग अपनाया। गांधीजी रॉलेक्ट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह करने के लिए एक नया संगठन सत्याग्रह सभा का गठन कर स्वयं इसके अध्यक्ष बने। 30 मार्च 1919 को हड़ताल करने का निश्चय किया, जिसे बाद में 6 अप्रैल 1919 को कर दिया। इसी प्रकार खिलाफत के प्रश्न पर गांधीजी ने पुनः अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध असहयोग आंदोलन करने का निश्चय किया। गांधीजी ने 1 अगस्त 1920 को लॉर्ड चेम्सफोर्ड को अपने पदक लौटाते हुए असहयोग आंदोलन को आरंभ किया। असहयोग आंदोलन में महिला और छात्रों को शामिल किया गया और स्वदेशी का प्रचार व रचनात्मक कार्यक्रमों को भारत में लागू करने का प्रयास किया गया।
- **सविनय अवज्ञा आंदोलन** - संपूर्ण भारत में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध असंतोष फैल रहा था। इस समय कांग्रेस ने यह निर्णय लिया कि यदि सरकार ने 31 दिसंबर 1929 तक औपनिवेशिक स्वराज्य प्रदान नहीं किया तो कांग्रेस अपना लक्ष्य पूर्ण स्वराज घोषित कर देगी। इसके बाद गांधीजी ने 11 सूत्री मांगे सरकार के समक्ष रखी। 12 मार्च 1930 ई. को गांधीजी ने अपने सहयोगियों के साथ कानून तोड़कर नमक बनाने के लिए साबरमती से दांडी यात्रा की, इस क्रम में गांधीजी 5 अप्रैल को डांडी पहुंचे और समुद्र के किनारे से नमक

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के ढेले चुनकर गांधीजी ने नमक कानून तोड़ा। इसके बाद संपूर्ण भारत में हिंसक आंदोलन आरंभ हो गए। कांग्रेस को गैर कानूनी संगठन घोषित करने से सविनय अवज्ञा आंदोलन में और अधिक तेजी आ गई।

सविनय अवज्ञा आंदोलन ने एशिया में अंग्रेजों की नैतिकता समाप्त कर दी। सविनय अवज्ञा आंदोलन ने सरकार को चारों तरफ से आर्थिक कठिनाइयों में डाल दिया। जनवरी 1931 ई. को गांधीजी सहित प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को जेल से रिहा किया गया तथा 5 मार्च 1931 ई. को गांधी-इरविन समझौता हुआ तथा सभी प्रकार के अध्यादेश वापस ले लिए गए और नमक बनाने की सीमित अनुमति के साथ राजनीतिक बंदियों को रिहा किया गया। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप सन् 1935 ई. के भारत शासन अधिनियम में ब्रिटिश सरकार ने सीमित मात्रा में प्रांतीय स्वायत्तता की मांग को स्वीकार किया।

- **भारत छोड़ो आंदोलन** - 14 जुलाई 1942 ई. को वर्धा में कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने अंग्रेजी शासन से मुक्ति के लिए भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया। इस आंदोलन का उद्देश्य भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त करना था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' और 'करो या मरो' भारतीयों का नारा बन गया। ये आंदोलन स्वतंत्रता के अंतिम चरण को प्रदर्शित करता है। इसने गाँव से लेकर शहर तक ब्रिटिश शासन को चुनौती दी। इससे भारतीय जनता के अंदर आत्मविश्वास बढ़ा और समानांतर सरकारों के गठन से जनता उत्साहित हुई। भारत को आज़ादी मिलने के पश्चात गांधीजी ने किसी भी पद को प्राप्त करने से इंकार कर दिया जो उनकी महानता थी। गांधीजी के सिद्धांत, आदर्श, मूल्य आज भी जनमानस का मार्ग प्रशस्त करते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष

गांधीजी के जीवन मूल्य, आदर्श, सिद्धांत और व्यक्तित्व निर्माण के क्षेत्र पर पड़े उपरोक्त प्रभाव और स्रोतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गांधीजी पर विश्व के प्रमुख विचारकों और धर्म का प्रभाव पड़ा। अहिंसा और सत्य जैसे विचार उनके समस्त सिद्धांतों का आधार बने। गांधीजी शुद्ध राजनीतिक विचारक नहीं थे, बल्कि वे सच्चे कर्मयोगी थे। वे कर्मण्यतावादी विचारक थे, जिन्होंने अपने सिद्धांतों को व्यवहारिक भूतल पर उतारा है व उन्हें यथार्थ की कसौटी पर कसा। जो विचार इस कसौटी पर खरे नहीं उतरे उन विचारों में परिवर्तन भी किया। उन्होंने अपने चिंतन में भारतीय मूल्यों को प्रस्तुत किया जिसमें नैतिकता, पवित्रता और छल-कपट की राजनीति के स्थान पर उन्होंने अहिंसा, सत्य, सहयोग, सेवा, लोककल्याण और प्रेम को स्थान दिया। गांधीजी का राजनीतिक चिंतन समानतामय समाज की परिकल्पना करता है और संप्रभुता, न्यायालय, प्रशासन, चुनाव-पद्धति, शिक्षा और अहिंसक राज्य की विदेश नीति आदि के बारे में विशेष व्यवस्था देते हुए राज्य विहीन व्यवस्था पर बल देता है। गांधीजी ने राजनीति में शक्ति की अपेक्षा नैतिकता, सदाशयता, हृदय परिवर्तन को महत्वपूर्ण माना है ।

संदर्भ सूची

- देसाई, नारायण (1996). गांधी कार्य, नई दिल्ली: गांधी शांति प्रतिष्ठान.
- बंग, ठाकुर दास (1990), गांधी को चुनौती: नए विकल्प की खोज, वाराणसी: सर्व सेवा प्रकाशन.
- वर्मा, डॉ. एस. एल. (1999). महात्मा गांधी एवं धर्मनिरपेक्षता, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.

- सिंह, नारायण (1985). मार्क्स और गांधी का साम्यदर्शन, प्रयाग: हिंदी साहित्य सम्मेलन.
- सिंह, राजेंद्र प्रसाद (1999). गांधी का पुनरागमन, पटना: गांधी संग्रहालय.
- शर्मा, प्रो. बी. एम. (2019), गांधी दर्शन के विविध आयाम, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.